

2605

67

नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमः ॥

कतमागदुमखदासी

ॐ नमः ॥





॥ लुः मिलः मिताः क
नः गंधकः न भूति
॥ पत्रगंधः पत्रा म
गंधकः पत्रविधिः प
कापकाः गंधः क
न भूतिः वयसिः इमसि
जयपलः वयः द्याः
१०८ः कुरु उमधि
१ धलः कुरु उम ५
१८ः पथ सो ११४ स
साक्षिः विताः कुरु
॥ कुरु मः कुरु मः
कुरु मः कुरु मः
साक्षिः सो ११४
मः साक्षिः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शुभ ता ता साधव इल इल मा
सा मा ग्री आ सा न या इलः न डा
ना या या न लेः ॥ ॥ कवि ता वा
कवि वा ता ॥ वा ५ ल ६ व नि ल
मा ६ः व ल १ क ल सः ॥ उ मा प्र क उ
पः क पि र क क का वा १ १ १ १
मं काः वा ता सः ल व लः डा म व ल
ल व च कि ॥ त उ न ले ॥ प च प
ल व ॥ प गा र र मा कः सि र
दा वा ॥ ॥ व ल १ व न नः व ल ६
ना गा वा ॥ ॥ गा ल कि ॥ य क य क
दाः र र नि ध ल ॥ क सिः मा
दा १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १
नं ना यः ॥ लः म लः प वा
ना गाः मा नि कः म किः प ल
व का लः ॥ ता डा नः ध नि धि नः

डा स क
सेः क ल
मे च स
नः प स
न लेः १
पुः डा मा
मे क
दा ला
मी ल
वि मि वि
म ल १ क
मि गा प
मीः १ १
ध नि ड



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ धनदानपूजाकायविधिसा
सक्त्याः ॥ प्राणां विधिथकाललानकाः धनपनाया
या ॥ धनलिस्तूर्यार्थया ॥ धनलिपूजागुत्तकल्पया
काः ॥ धनगुलमगुलदहधूनकाः ग्रहपूजाया ॥ ॥

धूपयाथ॥ ॥ॐ रुगवंशीमनू आदि श्रुत द वनाश्रनाधनाय व
जधूपनिर्योन्यामि॥ ॥ जाप॥ ॥ॐ नमो आदि श्रुत स्वाहा
ध्यान॥ ॥ॐ कर्त्तुं न पन्ना नृह रुदयं कमलं वाहिनं बभूव
नका वने गङ्गाधेनयं कलिंगदगका गधपवजनात्मानं राव

यकू॥ ॥थनस्वानवाथ॥ ॥ॐ आदि श्रुत स्वाहा॥ ॥यंच पदात्रय
जा॥ ॥त्रकचन्द्रनमः त्रकजर्हनेमः त्रकयूष्यनमः॥ ॥गी॥ ॥ॐ
नेलाकदीय संचरावचः दीयचक्रसत्वापकाः समयाजिनय
धधर्मराना एविप्रबलयनाशनमस्तु॥ खाशुनंगदियं कया

सूर्यविमल

सूपादिः॥०॥थनश्वसयहपूजा॥॥धूप॥॥ॐरुगश्रीमग
श्रीश्वसदवताश्रावाधनार्थवज्रधूपनिर्याकयामि॥॥ऊ
प॥॥ॐनमाश्वसदवतायस्वाहा॥॥ॐदीरुजंवपदाहसं
श्वेकवर्षदगावयदंमात्रंऊमूनागीनाहवंश्रायवप

मात्मानंरावयम॥॥थनस्नानवाय॥॥ॐश्वमाथस्वा
हा॥॥पंचपहावपूजाऊ॥॥श्वेकचतुर्नमाश्वेकगगंधना
माश्वेकपूषंनमः॥॥ऊ॥॥ॐदिमकंदुषामारुंडीना
दानवसंनिरुनमामिशगिनिरुकागंरुमकूटहयिकं

॥२॥ अ नमो गायत्र्य पूजा ॥ ॥ धूप ॥ ॐ ह ग व न्या म नुः मू ग
व द व न आ ग्रा ध ना र्थ व क धू प नि र्घा न क या मिः ॥ ॥ जा य ॥ ॥
ॐ मू ग ग्रा य स्वा हा ॥ ॥ ध्या न ॥ ॐ न क व र्ण न क मा ल्य च उ र्ह
कं व द गं शि गू ल म ष वा ह नं । मू ग न द श्व रू व र न द्वा ज व

उ र्ह णां मा त्मा नं रा व शं ॥ ॥ स्ना न वा य ॥ ॐ न का ग कु मा
ला य स्वा हा ॥ ॥ पंच प हा न पू जा ॥ ॥ मू ग ॥ ॥ ॐ ल क्मि गू र
प्र ति म ग ल ना सू ला क स पा द द्या न्चू ज म शि शू नि द ह
हो म वि द्या प्र ग म क क द ऊ ति ना र्थ ना रिः नि र्य न म

मुरुवस्थधनशीसूनाथ॥ ३ ॥ थनवृद्धयहयडा॥ ॥
धूम॥ ॥ उं रुगवंशीमनूवृद्धायवजधूपंनिर्याक्तया।
मिः॥ ॥ जाप॥ उं वृद्धायस्वाहा॥ ॥ ध्यान॥ ॥ पीतवर्ण
पीतमात्म्यं पीतवस्त्रं चरुं खंडं हस्तं च संदाधनं हस्तं वा

हस्तं गच्छदत्ता रुवं श्रीविंशतं पा मात्मानं रावयन्तु॥
थनस्नानवाय॥ ॥ उं वृद्धाय नमस्वाहा॥ ॥ पंचप्रहान।
पूजा॥ ॥ कीज॥ ॥ उं उत्पन्नं प्रजातं कनकवर्णं काय
गभक्तप्रसूनानासिद्धदत्तमः॥ ४ ॥ थनहस्तमिहपू

ॐ ॥ धूप ॥ ॐ ह ग व गु म क ह स्य निम्ना ना धं तार्थ व
ज धूप निर्या कया मिः ॥ ॐ ॥ ॐ ह ग व गु म क ह स्य निम्ना ना धं तार्थ व
ह ॥ ॐ न ॥ ॐ पी क व र्ण पी मा स्व न धनः पी क मा ल्यं
व उ र्जं सा उ स य द लु क म लु त्ध नः सि ह द श्व ह वः कू

गिर श्व च उ म षा मा त्मा नं ला व य ॥ ॥ स्नान वा य ॥ ॐ
ह स्य न य स्वा हा ॥ ॥ य च य हा न पू जा ॥ ॥ पी क च त्दं त म
पी क ज हं न नः पी क प र्ण न म ॥ ॥ नो ॥ स त्या त्रि जा न
क म ल सं यु क दे व ना जः चू ज म लि यु नि वि ना जि क या लि प

नवावस्थानं गीतं नमस्कृत्य चायुषि यजनयजमसि
मष्टयुषः ॥ ॥ धनशुक्रपूजा ॥ ॥ धूप ॥ ॐ हगवनथासः
नशुक्रदेवताशानाधर्नाथवज्रधूपनिर्यातयासिहे ॥ ॥ ॐ
पी ॥ ॐ नमः शुक्रायः स्वाहा ॥ ॥ ॐ श्वकवर्हश्वकमालचरः

ॐ वनजगूयदंदकमठलधनं रुजकटदश्वरुवर्गवव
जगमात्मानं हावथरु ॥ ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ शुक्रायस्व
हा ॥ ॥ यंचपहात्रपूजा ॥ ॥ ॐ श्वकचतुनमः श्वकजहंनमः ॥
श्वपूष्यंनमः ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ दप्यादिनासूत्रवनाचिन्तयाद

पञ्चः शमस्तर्ह वावक न र स च समा रा ना किं गू क ष ग सु द धि
कृत् स व र्ह का कं रु रं न म सु द द ह वि स रं न रा म ॥ ॥ थ न
स नी श्व र पू जा ॥ ॥ धू प ॥ ॥ उं ह ग व थ म न थ ग शि श्व र य
व न न्ना रा ध नार्थ व ज धू प शि र्या क्त या मि ॥ ॥ जा प ॥ ॥ उं न

म ग नि श्व रा य स्वा हा ॥ ॥ धू न ॥ ॥ उं ह कृ व र्ह कृ ह मा ल्यं
ध नं च उ र्ह जं व न जि गू र ध नं पा ग ध नं गृ ह पा ह रं सो रा रु द
श ह वं का ग्ध प व ष का या ग र्ह स ह नं क षा मा त्मा रा व थ ॥
स्वा न वा य ॥ ॥ उं ग नी श्व रा य स्वा हा ॥ ॥ पंच प ह न पू जा ॥ ४

ॐ कुरु नीच नमः हरी कुरु शय वीर नमः हरि नमः
नमः ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ हिन निल नू विन यु नि चान मूर्ति
कल्पार नी जल याम गु म मू य क ग र म मरुः ह ग व ना
ह व रु नि कालि ला क वि ग म ल क द ग म र्ग व व ध रं जि ॥ ॥

थन ना रु य ह प जा ॥ ॥ धू य ॥ ॐ ह ग व न् श्री म रु ना इ द व ना य आ
ना ध ना र्थ व क धू यं नि र्ग्या न्त या मिः ॥ ॥ जा यो ॥ ॐ क क रु ना रु
य न मः स्वा हा ॥ ॥ धू न ॥ ॐ न मा ना रु व य थि मा हि मू खा
य म न या रु वा यः पू र्ण म्यां जा य थः न धां मा त्मा नं रा व थ रु

स्वानवाय ॥ ॥ ॐ कृष्णनाहवनमस्तुहा ॥ ॥ यंचपहात्र
पूजा ॥ ॥ कृष्णचन्द्रनमः कृष्णज्ज्वालायवीर्यनमः कृष्णपूष्प
नमः ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ प्रियायधुमनयमाश्रयायः देवदा
नवकृष्णं शुभकिशिपूजायः सर्ववन्द्यतावन्मनूष्यात्महि

गायं हृदयहमं लसध्वनमउरु ॥ ॥ थनककुयह पूजा
धूप ॥ ॥ ॐ हगवन्यामरुः कउदवनाय न्ना नाधनाथैव
उधूपनिर्याक्त्यामि ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ कनवनमस्वाहा ॥ ॥
ध्यान ॥ ॥ ॐ नमकठवयिनाहिनूखाय नमः ॥ ॥

वाय॥ ॥ पूर्हमांजाजायः कषासात्मासंतावथन् ॥ ॥ स्तु
तवाय॥ ॥ कठवनमस्वाहा ॥ ॥ यंचपहानपूजा ॥ ॥ नास
विचिपचन्दनमः नानाविचिपऊहायविमंतमः नानावि
चिपपूष्यनमः ॥ ॥ माप ॥ ॥ उंलाकगूरागूरुः विलेख

पत्रिजनीयालिंगयदर्शय कियत्वमसिंपसन्नः कमा
कमान्नककइखसदायत्रियाजगदीकसखंकननमस
॥ ॥ थनऊन्मयहपूजा ॥ ॥ उंरुगवनूयासमऊन्मद
वनाम्नागाधनायवजधूपनिर्याकयाभि ॥ ॥ जाय ॥ ॥

ॐ जन्मदवनाय स्वाहा ॥ ॥ ध्यान ॥ ॥ जन्मदवनाय वेशा च
११ दवनाय सुकवर्ह सूर्या सनन ऊ ज दवनाय न वा सान्त
रावथरु ॥ ॥ स्नानवाथ ॥ ॥ ॐ नमजन्मदवनाय स्वाहा
पंचपहाने पूजा ॥ ॥ श्वरच वं नमः श्वरजहापवी नं नमः

श्वरपूषा नमः ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ जन्मकर्मसकलंच द
र्शनितित्यः आदित्य कादयान उयहः इ सु सान्त लोकस
दासु विपुत्रं यनमा यका नीरुक्ता नमामिति न सान य
पादयमः ॥ ॥ थनलियह वलिविथ ॥ ॥ ॐ श्रीं नोदुर्क

लाग्निः चतुर्मुखः सखलः वधवहस्यनिः शूकगालिचनः क
कुल्यासपनिवात्रेयाः ४४ दं सद्य याशाचमस्यः पूष्यः धूपदी
पवलिचदास्यामिः सपिंत्वाष्टककुडिद्युक्तुहजं कुपिव
कुः हसुतुष्टादानपमः सर्वसत्त्वाभं आयूनागार्धगान्तिपू

सिंधुनिषीमीचददध सर्वयाइइरुक्तुवजधना आरूपय
निः स्वाहा ॥ ॥ पंचप्रहानपूजा ॥ दशुलियनिवात्रपूजाः थन
स्वानकिरुनः ॥ ॥ उंजपाकृगससंकाराकारधययं महाइ
किरुनात्रिसर्वपापघ्नप्रसामिदिवाकरं ॥ ॥ आदिथ ॥

ॐ हिमकुण्डुवावाहंजीशार्दनवसंनिवन्तमासिगगि
निरुक्तागंरुमकुटरुषिनं॥ ॥स्व॥ ॥ॐधवसीगर्ह
संरुक्तविद्युक्तजसमपरुःकुमात्रंगकिहसंचम्रंगभवंप
रमासिहं॥ ॥म्र॥ ॥ॐपियंगुकलिकास्यामानूपमा

पनिमंवृद्धः सोम्यसर्वगुत्तयक्तंनमासिगगिनिगुक्तं
॥ ॥व॥ ॥ॐदवात्मचगुत्तयक्तमृषिराकाचनसन्निह
वस्रमूर्तिद्विलाकगपरासामिहहस्यनि॥ ॥व॥ ॥ॐहि
मकुण्डुमृगवाहंदेयानांपद्मगुत्तसर्वमासुप्रवक्तंचल

गर्वप्रसामिहं॥ ॥गु॥ ॥ॐ॥ हिमजः। घुनिःसर्हवविपू
आमहाकलंकायागर्हसंरुमंवदरुक्मगनिधयं॥ ॥ग
मूर्धकायंमाहाकजंचन्दादित्यपमर्दनैत्रोडत्रोडानिप्रो
डचमंनार्कंप्रसामिहं॥ ॥ग॥ ॥ॐ॥ पलालधूमसंका

गतायाग्रहनमस्तुतः ध्यानधालानिध्यानवर्ककड
प्रनमामिह॥ क॥ ॐ॥ यजुःशुक्लबृहगकागसर्वदवः
नमस्तुतः। सर्वहसर्वदादिव्यं जन्मप्रहनमास्य
ह॥ ॐ॥ ॐ॥ निम्नादि॥ ॥दानयनिकाय॥थन

उभयपूजाः दक्षिणमाया॥ विरुनि सनामाया॥ ऊ
ऊमानसि द्रुलन निवका॥ थनविगर्जनयाय
॥ थनदानपनि काय॥ ॥ आदिन्यनित्य॥ अ
याकाय॥ ॥ उ आदिन्यायकागधपयूजाय॥

अगमिदवनाय अमनकूलदवनाय ऊऊमा
नस्यसर्वाविष्टसामर्थी ॐ सात्रजनद्यदिकप्र
तिविवः सवत्स्रधनूदक्षिणउत्पन्नहृषय ॥
गालिभान्यादिविहिप्रार्जुंउयथावयासाहं ॥

॥ १ ॥ ॐ नमो नमो मायक्रिवास्त्रिसंरुताय नमो नमो
यसास्त्रनदवताय ऊऊमानस्ययहपिजाप्रगाय
थमायव्यासनाथमिदप्रतिविवावृत्तऊनचाटि
नगारविद्रदक्रिवास्त्रिसंरुताय नमो ॥ ॐ दं ॥

गिनगिलहहियायदानं उपदाययास्यहं ॥ २ ॥
ॐ अंगाययहमिस्रजाय ॐ नमो देवताय ऊऊ
मानस्यः अंगवयहपीजप्रअंणर्थं मायव्यास
मार्थ ॐ मां वऊयगिनप्रतिविं व अज्ञानगुणं

महसंयुय कामिन्द्र द्यटिन मूनवजन य।
मिष्टार्थः दक्षिण सयुय यया म्महं ॥ ३ ॥
उं वृद्धायः सामसूनाय ग्राहिति पूजाय वजस
यदिव नायः ऊजमानस्य वृद्धयह पूजायिः

जयगान्धर्थाः ॐ मा गजत यमिन सवर्धद कि
मसयुय कामि सवर्धद किम यति ष्टाद कि
मसयुय यया म्महं ॐ मा सिद्धार्थः वृहिपा
ग्राहिसयुय यया म्महं ॥ ४ ॥ उं वृहस्य यनः



रुमि सु माय श्व बुव दा द व गु वृ पा ध्वा यः अ ऊ
त्य द व मायः ऊ ज मान स्यः वृ ह स्य नि ग्र ह पि क्य
प्र सा न्थः आ व का स न्थः ॐ सा पि न वा स य
व स प्र य क मि पि न वा स प्र नि द्वा द क्रि ल्म स

दा व या म्य हः ॐ मा य व पा नः द क्रि ल्म स प्र य
प्र या म्य हः ॐ ॥ उं शु क्रा य रु गु सु मा य द न्य गु वृ
पा ध्वा य वे रा व न कू ल द व मा यः ऊ ज मान स्य ॥
गु क प्र ह न्नी ष्ट प्र ण म्थः आ य व का स न्थ

रुजभसहिमनः०० दंसरुतुल्यःनिर्यामियामि
०० मांमाषवहिप्राज्ञादिसंप्रदायाम्यहं॥॥
॥१॥ॐ नमोनाइवनमःश्रुमन्प्रियायसिंह
रुतायःकूलिगोपवदवतायःजमानस्यःनाइ

ग्रहपिण्डप्रगन्तार्थःश्रायूषकामनार्थः०० मांन
जहद्यदितप्रमिर्विवःखर्जदक्षिणसंप्रयका
मिः०० मानिलमाषवहिप्राज्ञादिसंप्रदायाम्य
मिहं॥८॥ॐ नमो कतव्यकास्यपसूनायव

ॐ नमानशयहाय॥ ॥ आदिष्याय विहिवास्य
रुया॥ ॥ आदिष्याय विहिस्वानशम॥ ग्रहयनि
सिद्धया मावासाः हाभाः लयासूयाविव॥ पचा
मृग॥ आउकायः चन्द्रमा॥ १ ॥ हायुहोमा॥

ग्रहयनि शर्या चन्द्रमा॥ मर्हि गंख डिमधू
(क्षेइइमया द्यत॥ स्वयूकाय॥ १ ॥ ॥
थनमृगवयाविहि॥ पचाः चाका॥ लयाथू
सा॥ आउकाय॥ १ ॥ थनवृद्धयाविहिः ॐ

काः लुदान ॥ ३ ॥ थनवृहस्यमि विविहि ॥ म
०० का ॥ ग्रहपतिल ॥ कासकाय ॥ ४ ॥ थन
वृत्रयाविहि ॥ कथगुग्रहयमि अहयासव ॥
मायुकाय ॥ ५ ॥ थनगानिधनयाविहि ॥ सा

सा ॥ लः अहयासा ॥ नखावाः हमात्रिकां ॥ काउ
काय ॥ ६ ॥ थनगहयाविहि ॥ म्वातः नयाः
खड्ग ॥ ना ॥ हाककाय ॥ ७ ॥ थनकठुयावि
हि ॥ कलत ॥ लः अहयावालस ॥ काउकाय

त्वयि वा न स दान ॥ ८ ॥ थ न ज न्न या वि हि ॥
आ क र ॥ मा यि जा ॥ अ रु या खा मा ॥ मा यू का यः
अ धू क्रि न या अ दान वि य ॥ ९ ॥ थु गि न अ ग्रं ह
या वि हि इ न ॥ अ रु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

उ न मा यी व ज स ला य ॥ ॥ व भ व न क वि धि लि ख क ॥ थ
न लि क्रा पां अ र य या य ॥ ॥ थ न लि गू र्वा य या यः डि नि पा
ल इ इ कि न क ॥ १२ ॥ व र्क द न थ स पो का स न चा यः म न द्र स
कं ॥ सि न मः ॥ थ या क्क अ न स र्ग म गु ल थ प ना या य ॥ थ न क
अ गू ल म गु ल द न क ॥ ॥ लो क पा ल व लि वि धिः थ न स र्ग

मथुलसकितन्य॥ ॥ सप्रयाय॥ ॐ उपाकुसुमसंकासंकासाय
यं महाइतिरुमावि सर्वपापघ्नं पुनमानिदियाकत्रं॥ ॥ धनस
र्थमथुलससंखलखनहाय॥ ॥ जाकिलंषकयाउपायार्थ
कथा॥ ॥ ॐ श्रीमन्मन्त्राद्यादससूर्यदवहारुमवकायपा
द्यावमनार्थप्रतिकुस्वाहा॥ ॥ थेस्वानवाय॥ ॥ ॐ मधाका

यस्वाहा॥ गीतासवस्वाहा॥ वक्रकुमालायस्वाहा॥ वृधायस्वाहा॥
लागस्यदायस्वाहा॥ अस्वाहा॥ कर्मवर्तायस्वाहा॥
अमृतप्रियायस्वाहा॥ शान्तिकर्तव्यनमस्वाहा॥ अर्मननमस्वा
हा॥ ॥ धननऊपयानस्वानवाय॥ ॥ कृतिकायस्वाहा॥ मोहि
नियस्वाहा॥ मृगसिलायस्वाहा॥ आशायस्वाहा॥ पुनवसूयस्वाहा
पूष्ययस्वाहा॥ अस्वषायस्वाहा॥ मर्द्यायस्वाहा॥ पूर्वहोलानि

यस्वाहा॥ ॥ उरुवस्वाहा॥ निधस्वाहा॥ हस्तायस्वाहा॥ विज्ञायस्वाहा॥
स्वामिस्वाहा॥ विगमस्वाहा॥ मूनेवाधायस्वाहा॥ अष्टाय
स्वाहा॥ मूलायस्वाहा॥ पूर्वाषाढायस्वाहा॥ उग्रषाढायस्वाहाः श्रव
नायस्वाहा॥ धन्यस्वाहा॥ उरुग्रहायस्वाहा॥ प्रवर्तितस्वा
हाः॥ मूनीयस्वाहा॥ रुनीयस्वाहा॥ ॥ धनलोकपालयानस्वा
नवाय॥ ॥ उं ष्टुनायस्वाहा॥ जर्मीयस्वाहा॥ ववृक्षायस्वाहा॥ कू

वेलायस्वाहा॥ मूत्रायस्वाहा॥ नेत्रायस्वाहा॥ वायूयस्वाहा॥ ष्टु
गनायस्वाहा॥ नागायस्वाहा॥ मूत्रायस्वाहा॥ वृक्षायस्वाहा
यस्वाहा॥ सूर्यायस्वाहा॥ पृथिव्यायस्वाहा॥ सर्वदिशोकपा
लायस्वाहा॥ ॥ धनवचनस्वानवाय॥ ॥ उं प्रविश्या नम
सविश्याय नमः दिवाकत्राय नमः राकत्राय नमः नक्षत्राय
नाय नमः वंध्याय नमः स्कंधाय नमः मातृदय नमः रुवे

स्यवेनमः साहाननवचनमः पंचपहालपूजाः॥ ॥थनध
लमभुलथिले॥ ॥हाउसिद्धः हाउऊऊकाः हाउस्वानः॥ने
विधः धूपमरुयधर्मायाय॥ ॥थनसाइइनाथम्राऊऊर
स्यमृघयाचक॥ ॥मृयकाय॥ ॥उं नमरुगदयायका
स्यपूजायः द्वितीयगङ्गसहस्रनाथः चावृषसहिनाथः कर्क
नपयगागवधूककुसुमदगाय॥ मृमृगाकलदवनाथः न

कवासपूष्पधूपदिपगभ्रुगहृषविनाथः उग्रगत्रथसमा
नूधायः दवदानवधावकृष्णगुदाकिनिङ्गसहिनाथः मृव
ननरुगवतः दानपतिसहिनाथ॥ मृयगभ्रहमभुलमध
मृनृषवैगधठ्ठदमृऊयगागभ्रयूष्पः धूपदीपप्रहारवलि
चषतिगृङ्गनाथस्यकीपनपीतीकगौरवगान्तिपूष्पिक
नूमादिनाथमृयषतिस्वाहा॥ ॥थनसखपूजा॥ ॥

ॐ यमनिधनाय स्वाहा ॥ पंचप्रहारा पूजा ॥ थनवाधकया
क ॥ सगनकाया सिद्धलकायः कापकं सिद्धदयकः सगनवि
यसिद्धलया ॥ किरन ॥ ॥ गूलू पूजा ॥ दक्षिण उमापेन ॥ म
गुल विमर्जन ॥ थनसूर्य मगुल या स्वानकी काया उः
आसिर्वदेविशविगजनया नाशविलक ॥ ॥ ४५ कि पूषा
वनिविधिसमाप्त ॥ ॥

ॐ नमो श्रीवज्रसत्वाय ॥ विवाहाविधानचा स्वकयाः कल
ग सगधक गकः सिद्धमूः वगलासः कामाविः थऊः कऊः
सिद्धः मोहनीः दिगलिवलिः थपिः धाऊः मगथापनाधून
का उः सूर्यार्धगूपावाघी ॥ पूजाहलजापयक ॥ ॥ गू
लूमगुलदनः लहसिदनः कलग पूजा मोहनि साधनः का

मावि साधनः थन स चा क व लिनं पि या उ ह यः स्व किक स स्व
नः गूल स द ल द नः ल ख व लि वि य वि ग र्ज न नि ला ड नः म र
रु ग ल च ॥ ॥ थन स मा ठ ल न ॥ ऊ उ न र य उ वि य ॥ ॥
विकं काल व य क ॥ चू सा पा रं स वा थ य ठ वा थ य क ॥ थ कू क कि
वानं स ऊ न क ॥ रु उ न उ लि नं सि रु रु य कः ठ व द स प प्या
व क ॥ कू म ल का नं द थु नि स्म हि त्थ ॥ १२ चू सा पा नं चू क

ग व ल ख नं मि खा पि य कः सि रु ल ला य कः ल न स रु य क यं
च व ध स्व नू पं पू ज या यः रु म कं क नः थन स गं वि यः थन च
रु नं पू न कः म ह्नी क सी हा ख नः आ ग म मा ल का न यः गू र
रुः थ का लि न्व कूः त कीः मा म वी वः ल मिः म ह्नी मा ल का
वि यः कू म्पा व जिः का ल व य कः ॥ थन सि रु ल यः व ड

वज्राक्षयः थचाकपूजाः दिगूलिवलिविथः ऊऊमानगू
लूमंदलदनकः स्नानकिरुनः गूलपूजादजिताः पंचाक
गः आगमकायकः गगनसिद्धमाहनिनायाः कलगभरि
षकः खारुकायः कामालिविसर्जनयायः कामालि
कायः हलिमचाद्रुत्तंसिलमूडानकाडाः दक्कपक

कायः॥ समयाचकः कलसूजायः रुत्तंसिलिमूलडा
काय॥ रुडनलिकारुयाचकः हलिमचायाकलडाका
माहनकातः लिकारुकायाय॥ स्वक्तिवाक्कायाय॥ ॥

ॐ नमो श्री गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥

गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥
गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥ गुरुभ्यो नमः ॥

यमसः हनंथथि मृपगूनं कुं कृ काया न धलसाः स्वक
ननेडोतिषाः मृपालसः वाड नाड सुडो नाडो मृनेगरे
वनायाथसः मृनेगलोकपनिस्थनं स्वनकाडोः थडो
जिडो नंदीनयायधकं कृ जाया नः हनं मृनेगपूजा
या नकाडोः मृनेगवायथेनकाडोः हनानासूगंधध

पदीपथनाडोः मृनेगनेविषः नानास्वानमात्राः पंच
प्रहावपूजाया नकाडो मृनेशदेवनायाथसपूजाया
नकाडोः जागदयकाडोः थडोगुजिवदानयायधक
धलः कृ कृ दानयायधलसाः नकधयहिः मांस
धयलाः मृसिधयकंवः नाडो गध मृया नला दानविः

याऽऽऽऽ हि जा ग्व म्म या न हि ला ग्व वि याऽऽऽऽ कंच जा ग्व म्म या न
कंच ला ग्व वि याऽऽऽऽ ह नंच मं ध य कं गू जा ग्व म्म या न कं
गू ला ग्व वि याऽऽऽऽ थ थि ठ प्र का व र दा न या य ध कं धा लः
ह नं प गू इ ल सांः मू न ग द व ता या थ सः ना ना गू ग भ धू प
दि प ने वि थः वृ थ्या दि द या काऽऽऽऽ मि ऊ रु य वृ छा या मः

ह न ह म ही ख प स रु या नं म जिऽऽऽऽ न ल क च ल क स मि ग
रु ऽऽ म्म प गु। ना ना न व ह नं पू जा या न काऽऽ म्म रु ऽऽ व प म्म
म ही ख॥ क न स लिल नं या ना गू लि ध र्म गू लि न ह्ना य॥ ही ला ऊ
गू लि क चः थ थ्या ता दा न या य ध कं धा लः थ थ्या ता स सू या क व
म म इ ह म ही ख कं म नू क ल क प नि स नः थ गु जा म हा न उ
ध न ध कः थ सू या क व म्म म इः ह न ह म ही खः क नू म चा या उ

कृयायः ॥ मनुजलोक न वेतका अ कुतलिलनयनयायधक
हालः कुतधर्मया नायापयेन महाकुडाधनथासजर्मकायदयी
आहमहीत्वः ॥ गुलिजर्मसिथआथिथिगूमइ. सूर्यांकनूत्तमइ. कु
नसूरुका नंदानया नापुननं कुतनगथधलसा महाइहमपूय
लायीडाः ॥ धनिपादीनसतिथियागवागन ऊ ५ मिजइयाडा लिप
नमयथुइयाडाऊर्मकायमम्वाल. हंमहिरवकुतनयडे

काकास्वाधायालकाख. ॥ उलकास्वाधायाम् ४४ मा. स्वा
नास्वाधायाम् ४४. ॥ धिपिस्वतंहिलाकवनकाडा। म
फुलशालमुगुमिडातं. हनं हंमहिरवमिनऊमकाडाः
अनेगदवतामनुष्यनंरागपयातकाव. दानया नाया
पूयनं. सुखावतिरुवनसऊन्मका लडा न्यदत. हंमहि
ष. कुतगलिलनयनया नागुपूयधारव गुलितमय

गलपानमवपितं किंयकावधर्मयानागुखगलि
लनंदानयानागुखगुलिनकायः समुद्रमचोनखि
पतियाल्लारवकायकः अगुलिपुत्रयाल्लारवकाय
मरुहमहिरवः आशिसुर्गरुवनसेनामाडाठ्ठदयासा
हामडाताडाः नपालमडलमधुद्वानपतितः माहा
रुडाधमपूजायानधकः नानाधूपदीपदयेकावता

नापुष्पमालदयकाडाः नानावाद्यदयकावरुडाधनपु
जायानधकः कनमालहनेदसयानः नाजायानः दानप
तियानः आसिर्वादवियमालहमहीखः स्वर्गरुवनसभा
सिमांरुतथागतयाकुलममममकेवाधिपानलानाडाः च
नकुनीहमहीषः ॥ ठ्ठमिमहीषपुमानसमाकी ॥ ॥ यत
हमपूजाविद्ये ॥ ॥ चवाहांस्याय ॥ ॥ महीषमाचक ॥

श्रीगुरुदेव

[illegible]

॥ यत्राकिः क्षान्तं च द्रुः श्व नं पृष्यः धूपः शिखरः त्रु
गति दधिः कलनं हि काः वाकः समधिः पक्ति

४ ल ५

ना गेव श्व न व सु ग स प ति श स या स त ॥ २

॥ गेव श्व न व सु ग स प ति श स या स त ॥ २

पतः न के व द नः त ग न पृष्यः धूपः शिखरः त्रु

पति शिखर या दासः मधि मल दः स्या सो नः वः शः

न के व सु ॥ २ वृष्य या वि ति श स या स त ॥ २

ले स व र्णः व न र्ण श च नः पा न र्ण्यः धूपः शिखरः

भक्त र्ण गति श्व नः कल वा क मः पल मधि

पक्ति ना सु व र्णः पा न व सु ॥ २ वृष्य या वि ति श स

॥ यत्राकिः क्षान्तं च द्रुः श्व नं पृष्यः धूपः शिखरः त्रु

॥ यत्राकिः क्षान्तं च द्रुः श्व नं पृष्यः धूपः शिखरः त्रु

वृद्धि नृपः तल्ल पृथ ता गः धूपः मधुः च
नः दधिः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः दधिः
सर्वः तल्ल गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः
पकं उभनः खलु मधिः संसाः मा चः पा न व
मुः ५॥ ~~संसाः मा चः पा न व~~ क प्र गः क्ष त्रु कं सः त
ले सलः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः क व्य नः च न
पृथः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः क व्य नः च न
गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः सलः त
गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः सलः त
संसाः मा चः पा न व मुः ५॥ ~~संसाः मा चः पा न व~~

हिः मा गः ध्वं तल्लः तल्ल निलः चि नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः
संसाः मा चः पा न व मुः ५॥ ~~संसाः मा चः पा न व~~ क प्र गः क्ष त्रु कं सः त
ले सलः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः क व्य नः च न
पृथः च नृगं ता च तल्ल पृथ ता गः धूपः क व्य नः च न
गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः सलः त
गतिर्ध्वं ताः गृह पतिपा नृवृष्टः सलः त
संसाः मा चः पा न व मुः ५॥ ~~संसाः मा चः पा न व~~

उम्व लुग ॥ ७ ॥ ना ह्यया वृत्तिः स्वातः धि नु कल ॥
तत्त्वनाडा ता वः नु ज्ञाप्ति ॥ ताल्ल ए धाः ताल्ल ऊका
धपः व्या मुः र्गतिः ना डाः हा मा विः गृह पति
न शा ख गिः पक डान र्गति न मधि ह्य सा इ म
सिः हा कु व स्यः ॥ ८ ॥ के नु मा वि ति काल

नः धा नु क क न व ॥ तत्त्व क क न वः प्र नः प
व वरुः प व स नः पंच व र्ग पृथ्वः धू नः व्याल
र गृतिः ह्या डा मा माः दे देः गृह पतिः वाल
सः पक डान त स क ता ह्य साः ना सिः हा न का प
॥ ९ ॥ इ म या वि तिः र्गति नुः धि नु ज्ञा हः तत्त्व
रु द किः व न गी ख र्गः हा न ऊका र्ग न पृथ्वः
धप क र्ग तः न गृह पति ज्ञा ॥ गृह पति ह्य

॥ १ ॥ अक्षयवृद्ध्या विधीः स

२ श्रीमद्गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नमः शिवाय नमो नांताः पूजाया यः ॥४

नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ५ ॥ अथ श्रीकृष्णार्चनम् ॥

[illegible]